धार्मिक सहिष्णुता का पता चलता है। कनिष्क के शासन के आरंभिक वर्षों में चलाये गये सिक्कों में यूनानी लिपि व भाषा का प्रयोग हुआ है। इन सिक्कों पर यूनानी देवी के चित्र अंकित मिले। बाद के काल के सिक्कों में ईरानी लिपि व भाषाओं में कि ईरानी देवता दिखायी देते हैं।

कनिष्क के समय बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार

कनिष्क के सिक्कों तथा पेशावर लेख के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने शासन के प्रारंभिक वर्षों में ही बौद्ध हो गया था। उसे बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का श्रेय सुदर्शन नामक बौद्ध आचार्य को दिया जाता है। पेशावर में प्रसिद्ध चैत्य का निर्माण करवाकर कनिष्क ने अपनी निष्ठा बौद्ध धर्म के प्रति प्रकट की। कनिष्क ने मध्य एशिया में अनेक विहार, स्तूप और मूर्तियों का निर्माण कराया।

तजाकिस्तान से मिली बुद्ध की विशालकाय मूर्तियां तथा अवशेष यह स्पष्ट करते हैं कि कनिष्क के समय बौद्ध धर्म उन प्रदेशों में फैल चुका था। काशगर, खोतान, कूची, यारकंद में अनेक विहार थे, जिनमें हजारों बौद्ध-भिक्षु निवास करते थे, यहीं से बौद्ध प्रचारक चीन गये।

चीन में बौद्ध धर्म का प्रवेश 65 ई० में सम्राट मिंगती के समय हुआ। वह हन वंश का था। हन शासक कुषाण राजाओं के समकालीन थे।

कहा यह भी जाता है कि कनिष्क ने भारत में भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय की पूजा की शुरुआत की। कनिष्क के सिक्कों पर इसका प्रमाण देखा जा सकता है। माना जाता है कि 101 या 102 ई० में कनिष्क की मृत्यु हो गई। कनिष्क ने लगभग 23 वर्षों तक कुषाण साम्राज्य पर शासन कर, स्वयं को उस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक साबित किया।

Rajesh Kr Singh.
Asst. Professor, History,
D.S.P.M.U

Scanned with CamScanner

अपना आधिपत्य स्थापित किया, अपितु भारत के मध्यदेश को जीतकर मगध से भी सातवाहन वंश के शासन का अंत किया। धर्मपिटक सूत्र नामक एक बौद्ध ग्रंथ में लिखा है कि कनिष्क ने पाटलिपुत्र को जीतकर अपने अधीन किया और वहां से प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान अश्वघोष और भगवान बुद्ध के कमंडल को प्राप्त किया। तिब्बत की बौद्ध अनुश्रुति में कनिष्क के साकेत (अयोध्या) विजय का उल्लेख है। कनिष्क के लेख हमें पश्चिम में पेशावर से लेकर पूर्व में मथुरा और सारनाथ तक प्राप्त हुये हैं, जो उसके राज्य विस्तार के संबंध में आधिकारिक पुष्ट प्रमाण है।

कनिष्क का साम्राज्य काफी विस्तृत था। यह दक्षिणी उजबेकिस्तान से पश्चिमी पाकिस्तान और उत्तरी भारत के साथ-साथ दक्षिणी पूर्व में मथुरा तक फैल गया था। कहा जाता है कि उसने कश्मीर को भी अपने अधिकार क्षेत्र में शामिल कर वहां कनिष्कपुर नामक शहर बसाया।

कनिष्क की धार्मिक उपलब्धियां — कनिष्क के शासनकाल के दौरान बौद्ध धर्म महायान और हीनयान में विभाजित किया गया था। कनिष्क बौद्ध धर्म का संरक्षक था और उसने 78 ई० में कश्मीर के कुंडलवन में चौथी बौद्ध संगीति (परिषद) बुलायी थी, जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुमित्र के द्वारा की गई थी। इस परिषद् के दौरान बौद्ध ग्रंथों का संग्रह किया गया था और टिप्पणियों को ताम्र पत्र पर उत्कीर्ण किया गया था। कनिष्क के दरबार में प्रसिद्ध चिकित्सक चरक और सुश्रुत रहते थे। कनिष्क के दरबार के अन्य विद्वानों में वासुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन और पार्श्व शामिल थे।

कनिष्क के सिक्के — कनिष्क की मुद्राओं में भारतीय हिंदू, यूनानी ईरानी और सुमेरियाई देवी-देवताओं के अंकन मिले हैं, जिनसे उनकी

Scanned with CamScanner

"कुषाण कौन थे? कनिष्क की उपलब्धियाँ"

(मौर्योत्तर भारत)

B.A - SEM-II Paper - CC-3

1-May-2020

भारत में मौर्योत्तर शासकों में पार्थियनों के बाद कुषाण शासक आये। कुषाण मूल रूप से चीन की यू-ची जनजाति के थे। इस वंश का भारत में संस्थापक कुजुल कडफिसस प्रथम था। कुषाण भी शकों की ही तरह मध्य एशिया से निकाले जाने पर काबुल-कांधार की ओर से यहां आ गये थे।

भारत की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का लाभ उठाकर ये लोग शुंग साम्राज्य के पश्चिमी भाग को अपने अधिकार में कर लिया। विजित प्रदेश का केंद्र कुषाणों ने मथुरा को बनाया, जो इस समय उत्तर भारत के धर्म, कला तथा व्यापारिक यातायात का एक प्रमुख नगर था।

कनिष्क

कनिष्क प्रथम द्वितीय शताब्दी में कुषाण राजवंश का सबसे महान शासक था। कनिष्क को भारत एवं मध्य एशिया के इतिहास में अपनी विजय, धार्मिक उपलब्धि, साहित्य तथा कला प्रेमी होने के कारण विशेष स्थान प्राप्त है। इतिहासकारों के अनुसार कनिष्क 78 ई० में राजसिंहासन पर बैठा था और इसी समय से इस वर्ष को 'शक संवत' के आरंभ की तिथि माना जाता है।

राज्य विस्तार - कनिष्क ने कुषाण वंश की शक्ति का पुनरुद्धार किया। उसने उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम चारों दिशाओं में अपने राज्य का विस्तार किया। सातवाहनों को परास्त कर कनिष्क ने न केवल पंजाब पर अपना

Scanned with CamScanner